



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 06, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2026)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

दुधारू पशुओं में ट्रांजिशन पीरियड की समस्याएँ और उनका समाधान

*विकास कुमार मीना, मनोज कुमार, सन्ताना दास, अभिषेक छेत्री एवं राहुल सिंह यादव

पशुधन उत्पादन प्रबंधन प्रभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान,

करनाल, हरियाणा, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: vikasggc20@gmail.com

डेयरी क्षेत्र भारत में किसानों के लिए एक प्रमुख आय का साधन बनकर उभरा है। भारत में दुनिया की सबसे बड़ी मवेशी आबादी है, जिसमें 303.76 मिलियन मवेशी शामिल हैं, जिनमें 193.46 मिलियन गायें और 109.85 मिलियन भैंसें हैं। देश में दुधारू पशुओं की उत्पादकता में निरंतर सुधार देखा गया है, जो सुदृढ़ विकास नीतियों, सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा दी जाने वाली पशु चिकित्सा सेवाओं और श्वेत क्रांति के जनक दिवंगत डॉ. वर्गीज कुरियन के अथक प्रयासों से संभव हुआ है। लेकिन इतनी बड़ी मवेशी संपत्ति होने के बावजूद, आज भी बहुत से किसान भाइयों को ब्याने के आसपास पशुओं की बीमारियों से भारी नुकसान उठाना पड़ता है। आपने अक्सर देखा होगा कि ब्याने के आसपास कई गायें-भैंसें बीमार पड़ जाती हैं। कोई खड़ी नहीं हो पाती, किसी का दूध कम हो जाता है, तो किसी की जेर (प्लेसेंटा) अंदर ही रुक जाती है। इसका सीधा संबंध "ट्रांजिशन पीरियड" यानी परिवर्तित अवधि से होता है।

ट्रांजिशन पीरियड क्या है?

यह वह समय है जो ब्याने से 3 हफ्ते पहले शुरू होता है और ब्याने के 3 हफ्ते बाद तक चलता है। इस दौरान पशु के शरीर में बहुत बड़ा बदलाव होता है, वह गाभिन (गर्भवती) अवस्था से दूध देने वाली अवस्था में आती है। पेट में बच्चा भी बड़ा हो जाता है, जिससे रूमेन (पशु का बड़ा पेट, जहां चारा पचता है) में जगह कम हो जाती है और पशु कम चारा खाने लगता है। इसी समय शरीर के हार्मोन भी तेजी से बदलते हैं। यही कारण है कि लगभग 75% बीमारियाँ ब्याने के पहले महीने में ही होती हैं। अगर इस समय ध्यान न दिया जाए, तो पशु बीमार पड़ सकता है, दूध कम हो सकता है, और इलाज का खर्च भी बढ़ जाता है। लेकिन अगर सही देखभाल की जाए, तो यही अवधि पशु के पूरे साल के दूध उत्पादन की नींव बन जाती है।

इस अवधि में होने वाली मुख्य समस्याएँ

1. दूध बुखार (मिल्क फीवर)

यह खून में कैल्शियम की मात्रा बहुत कम हो जाने से होता है। जब बच्चा और दूध बनने के लिए शरीर को अचानक बहुत ज्यादा कैल्शियम चाहिए होता है, और शरीर उसकी पूर्ति जल्दी नहीं कर पाता, तो यह बीमारी होती है। ज्यादातर यह ब्याने के 12 से 24 घंटे के भीतर होती है। पशु सुस्त हो जाता है, कान ठंडे पड़ जाते हैं, खड़ा होने में परेशानी होती है और अंत में पशु जमीन पर बैठ जाता है और उठ नहीं पाता। समय पर उपचार न हो तो पशु की जान भी जा सकती है। दूध बुखार होने वाली गाय में थनैला और अन्य संक्रमण होने का खतरा भी 8 गुना तक बढ़

जाता है, क्योंकि कैल्शियम की कमी से मांसपेशियां ठीक से काम नहीं करतीं, यहां तक कि थन का मुंह (टीट सिंफेक्टर) भी ठीक से बंद नहीं हो पाता, जिससे बैक्टीरिया अंदर घुस जाते हैं।

2. कीटोसिस

जब पशु को पर्याप्त ऊर्जा (एनर्जी) चारे से नहीं मिलती, तो शरीर अपनी चर्बी को तोड़कर ऊर्जा बनाने की कोशिश करता है। इस प्रक्रिया में खून में "कीटोन बॉडीज़" नाम के हानिकारक तत्व बढ़ जाते हैं, जिससे पशु को भूख कम लगती है, वह सुस्त रहता है, और सांस या दूध से एक अजीब सी मीठी-सी गंध आ सकती है। यह समस्या ज्यादातर ब्याने के बाद पहले 6 हफ्तों में होती है, जब दूध बहुत तेजी से बढ़ रहा होता है लेकिन चारा खाना उस रफ्तार से नहीं बढ़ पाता। कीटोसिस से पीड़ित पशु में दूध उत्पादन गिर जाता है और आगे चलकर बच्चादानी हटने (डिस्प्लेस्ड अवोमासम) जैसी गंभीर बीमारी का खतरा भी बढ़ जाता है।

3. जेर का रुक जाना (रिटेंड प्लेसेंटा)

सामान्यतः ब्याने के 12-24 घंटे के भीतर जेर अपने आप निकल जाती है। अगर यह 24 घंटे बाद भी न निकले, तो इसे जेर रुकना कहते हैं। इसका मुख्य कारण है पशु की प्रतिरोधक क्षमता (इम्यून सिस्टम) का कमजोर होना, जिससे शरीर जेर को ठीक से अलग नहीं कर पाता। जेर रुकने पर पशु को बुखार आ सकता है, भूख कम हो जाती है, और गर्भाशय में संक्रमण का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। जिन पशुओं की जेर रुक जाती है, उनमें कीटोसिस होने की संभावना भी 16 गुना ज्यादा हो जाती है।

4. गर्भाशय में संक्रमण (मेट्राइटिस और एंडोमेट्राइटिस)

ब्याने के बाद गर्भाशय के अंदर बैक्टीरिया चले जाते हैं, यह एक सामान्य बात है, लेकिन जब पशु की प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होती है तो बैक्टीरिया बढ़ते रहते हैं और संक्रमण हो जाता है। इससे बदबूदार, भूरे-लाल रंग का पानी जैसा स्राव योनि से निकलता है, कभी-कभी बुखार भी आता है। लगभग 20-30% पशुओं में यह समस्या देखी जाती है। अगर यह संक्रमण 3-4 हफ्ते से ज्यादा समय तक रहे, तो इसे एंडोमेट्राइटिस कहते हैं, जिससे पशु दोबारा गाभिन होने में परेशानी होती है और ब्याने का अंतराल बढ़ जाता है।

5. थनैला (मास्टाइटिस)

यह थन में होने वाला संक्रमण है, जो ज्यादातर ब्याने के आसपास ही शुरू होता है। ब्याने से 7-10 दिन पहले थन के मुंह पर मौजूद प्राकृतिक "प्लग" टूटने लगता है, जिससे बैक्टीरिया अंदर घुसने का रास्ता मिल जाता है। थन सूज जाता है, गरम और दर्द भरा हो जाता है, दूध में गांठें या पानी जैसा दूध आ सकता है, और दूध की मात्रा भी कम हो जाती है। कमजोर प्रतिरोधक क्षमता और गंदा बाड़ा इस बीमारी को और बढ़ा देते हैं।

6. भूख कम लगना (डीएमआई में कमी)

ब्याने से लगभग 3 हफ्ते पहले से पशु का चारा-दाना खाना अपने आप कम होने लगता है। यह कमी ब्याने के आसपास सबसे ज्यादा होती है, लगभग 30% तक चारा कम हो जाता है, और इसका ज्यादातर हिस्सा ब्याने से 5-7 दिन पहले होता है। इसका कारण है पेट में बच्चे का दबाव, हार्मोन में बदलाव और कभी-कभी हल्की-फुल्की बीमारी की शुरुआत। भूख कम लगना अकेले कोई बीमारी नहीं है, बल्कि यह आगे आने वाली बड़ी समस्याओं का पहला संकेत होता है।

7. शरीर का वजन और बॉडी कंडीशन कम होना

जब चारा कम खाया जाता है और दूध ज्यादा बनने लगता है, तो शरीर अपनी चर्बी का इस्तेमाल ऊर्जा के लिए करने लगता है। इसे "नकारात्मक ऊर्जा संतुलन" (निगेटिव एनर्जी बैलेंस) कहते हैं। इससे पशु धीरे-धीरे दुबला होता जाता है, उसकी बॉडी कंडीशन स्कोर (शरीर की मोटाई मापने का पैमाना) गिरता जाता है। ज्यादा वजन कम होने से न सिर्फ दूध उत्पादन प्रभावित होता है, बल्कि दोबारा गाभिन होने में भी देरी होती है।

एक नजर में सभी समस्याएँ

तालिका 1: ट्रांजिशन पीरियड की मुख्य समस्याएँ, उनका समय और पहचान

समस्या	कब होती है	मुख्य पहचान
दूध बुखार (मिल्क फीवर)	ब्याने के 12-24 घंटे के भीतर	सुस्ती, ठंडे कान, खड़ा न हो पाना
कीटोसिस	ब्याने के बाद पहले 6 हफ्ते	भूख कम, सुस्ती, सांस में मीठी गंध
जेर का रुकना	ब्याने के 24 घंटे बाद भी न निकले तो	बुखार, भूख कम, संक्रमण का खतरा
गर्भाशय संक्रमण	ब्याने के बाद, 20-30% पशुओं में	बदबूदार स्राव, बुखार
थनैला (मास्टाइटिस)	ब्याने के आसपास	सूजा हुआ, गरम, दर्द भरा थन
भूख में कमी (DMI)	ब्याने से 5-7 दिन पहले सबसे ज्यादा	चारा 30% तक कम खाना
वजन व बॉडी कंडीशन गिरना	नकारात्मक ऊर्जा संतुलन के कारण	धीरे-धीरे दुबलापन, कम दूध

इन समस्याओं के कारण

- ब्याने से पहले और बाद में चारा-दाना ठीक से न खाना
- संतुलित आहार न मिलना (खनिज, विटामिन-ई, सेलेनियम की कमी)
- ज्यादा मोटा या ज्यादा दुबला पशु (बॉडी कंडीशन ठीक न होना)
- गंदा, भीड़भाड़ वाला और नमी वाला बाड़ा
- पानी की कमी या गंदा पानी
- अचानक चारे में बदलाव (जैसे एकदम से दाना बहुत बढ़ा देना)
- प्रसव के समय सफाई का अभाव
- पशु को आराम की जगह न मिलना, बहुत ज्यादा गर्मी या तनाव

पहचान के सरल लक्षण

किसान भाई इन बातों पर ध्यान दें:

- पशु सुस्त है, उठने में परेशानी हो रही है, कान ठंडे हैं
- चारा-पानी कम खा-पी रहा है
- पूंछ के नीचे या योनि से बदबूदार स्राव आ रहा है
- थन गरम, सूजा हुआ या दर्द भरा है
- शरीर का तापमान ज्यादा (बुखार) है
- जेर 24 घंटे बाद भी नहीं निकली
- दूध में गांठें, खून या पानी जैसा दूध आ रहा है
- पशु लगातार दुबला होता जा रहा है
- सांस या दूध से अजीब मीठी गंध आ रही है

अगर ये लक्षण दिखें, तो देर न करें, तुरंत ध्यान दें और नजदीकी पशु चिकित्सक से सलाह लें।

बचाव और प्रबंधन

संतुलित आहार: ब्याने से पहले 3 हफ्ते और बाद के 3 हफ्ते तक पशु को संतुलित चारा देना सबसे जरूरी काम है। सूखे समय (ड्राई पीरियड) में हरा चारा, सूखा चारा (जैसे गेहूं की भूसी, ज्वार) और थोड़ी मात्रा में दाना दें। ब्याने के करीब आते ही दाने की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ाना शुरू करें, ताकि पेट के बैक्टीरिया को नए चारे की आदत पड़ जाए। एकदम से दाना बहुत बढ़ा देने से एसिडोसिस (पेट में एसिड बनना) हो सकता है। ब्याने के बाद पशु को जितना चारा चाहे खाने दें (चारा 5-10% ज्यादा डालें ताकि वह कम न पड़े)।

खनिज मिश्रण और कैल्शियम

ब्याने से पहले और बाद में खनिज मिश्रण (मिनरल मिक्सचर) जरूर दें, इसमें कैल्शियम, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम जैसे तत्व होते हैं जो दूध बुखार से बचाव करते हैं। ब्याने के तुरंत बाद कैल्शियम जेल या कैल्शियम की खुराक (पशु चिकित्सक की सलाह से) देना बहुत फायदेमंद होता है, खासकर उन गायों को जो पहले भी दूध बुखार से पीड़ित रही हों या ज्यादा दूध देने वाली नस्ल की हों। विटामिन-ई और सेलेनियम की उचित मात्रा भी थनैला और जेर रुकने से बचाव में मदद करती है।

स्वच्छता

बाड़े को हमेशा साफ, सूखा और हवादार रखें। ब्याने की जगह पर ताज़ा, सूखा और साफ बिछावन डालें। गंदे और नमी वाले बाड़े में बैक्टीरिया तेजी से बढ़ते हैं, जिससे थनैला और गर्भाशय संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। ब्याने के बाद 10-15 दिन तक पशु को अलग और साफ जगह पर रखें।

पर्याप्त पानी

पशु को हमेशा साफ, ताज़ा और पर्याप्त पानी मिलना चाहिए। पानी की कमी से चारा खाना भी कम हो जाता है, जिससे भूख कम लगने की समस्या और बढ़ जाती है। गर्मियों में पानी की मात्रा और उपलब्धता का विशेष ध्यान रखें।

उचित बॉडी कंडीशन

पशु न ज्यादा मोटा हो, न ज्यादा दुबला। सूखने के समय और ब्याने के समय शरीर की स्थिति मध्यम (न मोटी, न पतली) रखें। ज्यादा मोटा पशु ब्याने के बाद कम चारा खाता है और फैटी लिवर, कीटोसिस जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। इसके लिए सूखने के 60 दिन पहले से ही आहार पर नियंत्रण रखना जरूरी है।

गर्भाशय और थन की नियमित जांच

ब्याने के बाद पहले दो हफ्तों तक थन और योनि स्नायु पर नजर रखें। हल्की सी भी सूजन, बदबू या असामान्य स्नायु दिखे तो तुरंत जांच कराएं।

प्रसव के बाद निगरानी

ब्याने के बाद पहले दो हफ्तों तक पशु पर विशेष निगरानी रखें। वह कितना खा रहा है, कैसे उठ-बैठ रहा है, दूध कैसा आ रहा है, यह देखते रहें। इस दौरान पशु के तापमान की भी जांच करना अच्छा रहता है।

समय पर पशु चिकित्सक से संपर्क

अगर कोई भी असामान्य लक्षण दिखे, तो घरेलू उपाय में समय न बिताएं, तुरंत नजदीकी पशु चिकित्सक को दिखाएं। समय पर इलाज से पशु की जान बचती है और आगे की बड़ी समस्याओं से भी बचाव होता है।

किसान के लिए 10 महत्वपूर्ण सुझाव

1. ब्याने से 3 हफ्ते पहले से पशु के आहार में बदलाव धीरे-धीरे करें
2. ब्याने के आसपास खनिज मिश्रण और जरूरत पड़ने पर कैल्शियम जरूर दें
3. पशु का शरीर न ज्यादा मोटा, न ज्यादा दुबला रखें
4. बाड़े को साफ-सुथरा, सूखा और हवादार रखें
5. पर्याप्त और साफ पानी हमेशा उपलब्ध रखें
6. ब्याने के बाद पहले 24 घंटे विशेष ध्यान दें
7. जेर 24 घंटे में न निकले तो तुरंत चिकित्सक को बुलाएं
8. थन की नियमित जांच करें, हल्की सूजन को भी नजरअंदाज न करें
9. चारे में अचानक बदलाव न करें, धीरे-धीरे मात्रा बढ़ाएं
10. किसी भी बीमारी के लक्षण दिखने पर देर न करें, समय पर उपचार कराएं

निष्कर्ष

ट्रांजिशन पीरियड (ब्याने से 3 सप्ताह पहले से लेकर ब्याने के 3 सप्ताह बाद तक) दुधारू पशुओं के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण अवधि होती है। इस समय संतुलित आहार, खनिज मिश्रण, पर्याप्त पानी, स्वच्छ बाड़ा और नियमित निगरानी से दूध बुखार, कीटोसिस, जेर रुकना, गर्भाशय संक्रमण और थनैला जैसी समस्याओं से काफी हद तक बचाव किया जा सकता है। इस अवधि में सही प्रबंधन से पशु स्वस्थ रहता है, दूध उत्पादन बढ़ता है, दोबारा गाभिन होने में कम समय लगता है और इलाज पर होने वाला खर्च भी कम होता है। इसलिए किसान भाइयों को ब्याने के आसपास पशु की विशेष देखभाल करनी चाहिए और किसी भी असामान्य लक्षण पर तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए। सही ट्रांजिशन प्रबंधन ही स्वस्थ पशु, अधिक दूध उत्पादन और अधिक लाभ का आधार है। याद रखें, "जितनी अच्छी देखभाल ब्याने के आसपास होगी, उतना ही फायदा पूरे साल दूध और स्वास्थ्य दोनों में मिलेगा।" थोड़ी सी सावधानी और सही समय पर की गई देखभाल, आपके पशु को स्वस्थ और आपकी डेयरी को फायदेमंद बना सकती है।